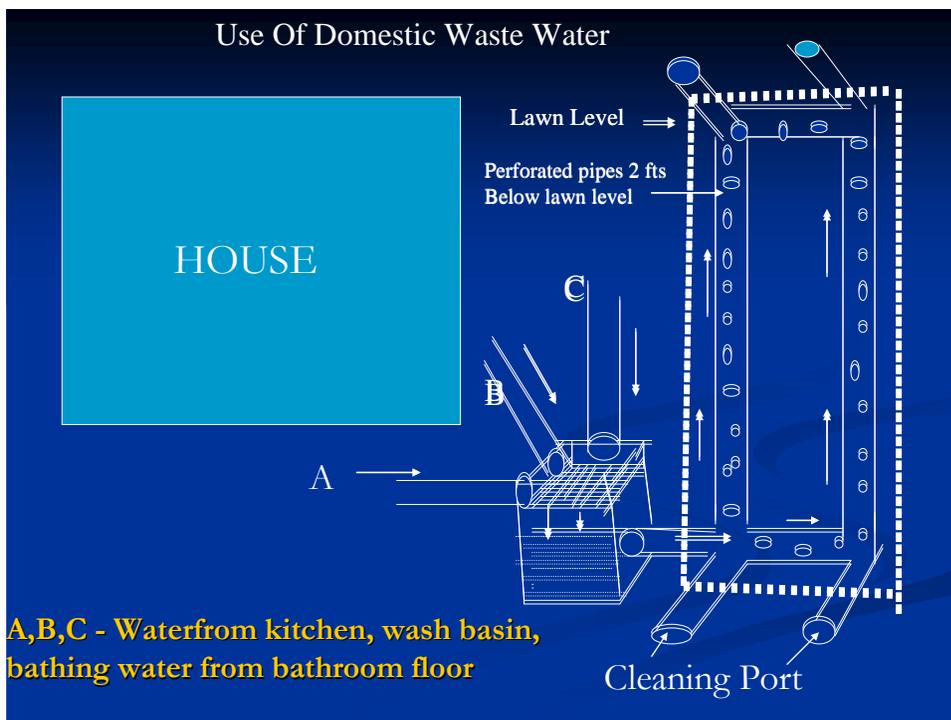


Dr. Sanjay and his wife Dr. Meeta are deeply concerned with the present environmental problems and believe that every one of us can play a role at an individual level to improve our environment. In their new house, they have designed a different kind of domestic water harvesting for reusing the domestic waste water for kitchen garden and the lawns. Besides, they have also installed a modified rainwater harvesting system that requires less cleaning and can store more water in case of heavy rains. They are using the solar energy for hot water and garden lights.

Domestic Water Harvesting

We have designed a unique system of reusing the waste water from domestic use i.e. from kitchen, wash basin, bathing water from bathroom floor [except that of commode that goes directly to main sewer line outside]. This waste domestic water is initially passed through a small filtration chamber containing fine iron grill. This grossly filtered water is then allowed to pass through underground perforated plastic pipes lying about two feet below the ground level. This water is absorbed by the soil and some of this water comes to surface through capillary action. This whole process is a passive one based on gravity and does not need motorized function. This reduces the demand for watering the lawns and kitchen garden.

Rain Water Harvesting: Besides this we have also made the provision of rainwater harvesting. We have modified the rainwater harvesting to allow better and adequate filtration of the rain water before it reaching the ground water. It requires less cleaning and can store more water in case of heavy rains.





में ये कहना चाहूंगा की पानी की समस्या के सन्दर्भ में २-३ बातें कहना चाहूंगा जो बड़े कारण हैं पर नज़र नहीं आते। १, आज पानी की कीमत क्या है इसका सीधा निर्धारण बिजली की कॉस्ट से होता है जैसे मेरी पानी की ओवरहेड टंकी सबमर्सिबल से २ घंटे में भर जाती है और मेरी मोटर 1किलो वाट की है तो मेरिस पानी की कॉस्ट २ यूनिट बिजली के बराबर हुयी। यानि की १२ रु इसलिए हमको अभी नहीं अखर रहा. २, साइंस या टेक्नोलॉजी का विकास भी नेचुरल रिसोर्स के लिए कभी-कभी नुकसान दयाक साबित हुआ है. जैसे अब हम बहुत गहरे पानी को भी निकाल लेते हैं पहले जेट पंप से इतना संभव नहीं था पर अब सुबमर्सिबल से है! ३. बिना श्रम के आसानी से पानी मिल रहा है, केवल बटन दबने से काम हो रहा है। यदि हमको फर्श या कार धोने के लिए हैंड पंप या कुएं से पानी निकलना पड़े तो हम चाहेंगे की एक बाल्टी से ही कार साफ़ हो जाए! अनाज की कीमत तब समझ आती है जब अकाल पड़ता है उसी तरह से पानी की कीमत तभी समझ आती है जब सूखा पड़ता है। विडम्बना ये है की जब ऐसी त्रासदी पड़ती है तो सबसे जादा गरीब और मिडिल क्लास तबका झेलता है क्यूंकि कीमतें अचानक से बहुत बढ़ती हैं! इसका एक उदाहरण में देना चाहूंगा ,आज आगरा की सड़कों पर जो आंदोलन पानी के लिए हो रहा है ये सब लोग गरीब तबके के है क्यूंकि सबसे जादा हुआ है और अमीर लोग अपनी-अपनी बोरिंग के भरोसे अभी मस्त हैं की लेकिन बहुत जल्द उनको पता चल जायेगा की पानी की कीमत क्या होती है जादा नहीं अभी आप मेट्रो सिटी में चले जाइए, गुडगांव, डेल्ही, मुंबई etc. अभी लेवल २ सिटी ठीक हैं!